वर्ष-2, अंक 5, मई 2019

राज भवन

संवाद

राज भवन, बिहार की मासिक पत्रिका

विशेष आकर्षण

- राज्यपाल की अध्यक्षता में उच्च शिक्षा के विकास-प्रयासों की समीक्षा हेतु उच्चस्तरीय बैठक
- 'नैक' जागुरुकता एवं प्रशिक्षण कार्यशाला हुई आयोजित
- राज्यपाल ने ''उच्च शिक्षा में डिजिटल पहल'' विषयक कार्यशाला का उद्यघाटन किया

नये भारत में वैज्ञानिक ज्ञान और तकनीकी योग्यता की महत्ता काफी बढ़ गयी है-राज्यपाल

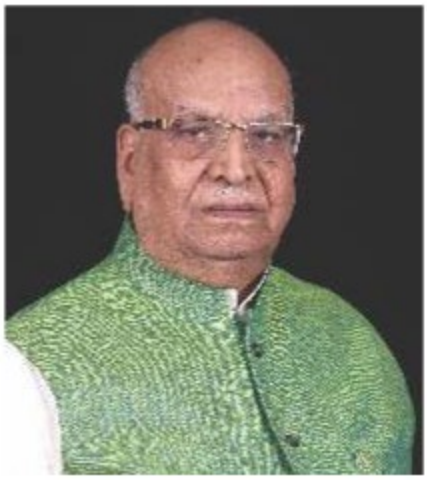

नये भारत में वैज्ञानिक ज्ञान और तकनीकी योग्यता की महत्ता काफी बढ़ गई है। हमारी पुरानी ज्ञान–सम्पदा भी काफी महत्वपूर्ण रही है। चिकित्सा शास्त्र, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, अर्थशास्त्र, गणित, राजनीति एवं नीति शास्त्र आदि समस्त ज्ञान–विज्ञान के विषयों में हमारी प्राचीन विरासत अत्यन्त समृद्ध रही है। बिहार की भूमि पर भी ज्ञान, कला, दर्शन एवं चिन्तन की कई प्रमुख धाराओं का उद्‌भव हुआ है, जिनकी वजह से पूरे विश्व में प्रदेश एवं राष्ट्र की मर्यादा एवं प्रतिष्ठा बढ़ी है।

आज राज्य में उच्च शिक्षा क्षेत्र में तेजी से सुधार हो रहे हैं। काफी संख्या में विद्यार्थी महाविद्यालयों/ विश्वविद्यालयों में नामांकित होकर अध्ययन कर रहे हैं। आज शिक्षक कक्षाओं में नियमित रूप से अध्यापन करते हैं, समय पर कक्षाएँ होती हैं, परीक्षाएँ होती हैं और परीक्षाफल भी प्रकाशित होते हैं। अब विश्वविद्यालयों में समय पर दीक्षांत–समारोह आयोजित कर डिग्रियाँ भी वितरित हो रही हैं। 'उच्च शिक्षा का ब्लू प्रिन्ट' तैयार हो रहा है, जिसमें लघुकालिक, मध्यकालिक और दीर्घकालिक (5 वर्षों हेतु) योजनाएँ समाहित कर उच्च शिक्षा के समग्र विकास हेतु सार्थक प्रयास किए जाएँगे।

आज का युग ऐसा है, जिसमें कौशल–उन्नयन के जरिये युवा काफी बेहतर रूप में अपने भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। सिर्फ सरकारों के भरोसे सबकुछ नहीं हो सकता। अपनी हूनरमंदी के बल पर ही युवा अपना एवं अपने राष्ट्र का बहुमुखी विकास कर सकते हैं।

भारत एक युवा राष्ट्र है। यहाँ की 60 प्रतिशत से अधिक आबादी युवाओं की है, जो अपनी प्रतिभा और परिश्रम के बल पर एक नये सशक्त और श्रेष्ठ भारत का नवनिर्माण कर रहे हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि प्रत्येक युवक एक ऐसी मानव–संपदा के रूप में अपने को विकसित करे कि उसे रोजगार या नौकरी माँगने किसी दूसरे के दरवाजे नहीं जाना पड़े। आज युवा को रोजगार–याचक नहीं बल्कि रोजगार–प्रदाता के रूप में अपने को राष्ट्र के समक्ष प्रस्तुत करना जरूरी है।

उच्च शिक्षा में बराबर शोध–कार्यों की महत्ता रही है। आज राज्य में हमें ऐसी उच्च शिक्षा का विकास करना है, जहाँ वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान की महत्ता हो, साथ ही शोध–कार्यों पर भी पूरा ध्यान दिया जाता हो।

तकनीकी विकास के साथ–साथ सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विकास भी जरूरी है, जो भारत की मूल भावधारा से जुड़ी बात है।

प्यारे स्वाभिमानी युवाओं! सतत् नये सृजन के लिए संकल्पित रहो। बराबर जिन्दगी में कुछ नया सकारात्मक रचते और गढ़ते रहने का प्रयास करो।"

(नेताजी सुभाष इन्स्टीच्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, अमहरा, बिहटा के सभागार में आयोजित इस संस्थान के वार्षिक तकनीकी, सांस्कृतिक एवं क्रीड़ा महोत्सव –'क्रस्ट–2019' (KRUST-2019) का औपचारिक उद्‌घाटन करते हुए राज्यपाल श्री लाल जी टंडन– 19 अप्रैल 2019)

महामहिम राज्यपाल–सह–कुलाधिपति महोदय के मार्ग–दर्शन में उच्च शिक्षा के विकास–प्रयासों को तेज करने के उद्देश्य से विगत अप्रैल महीने में कई सार्थक पहलें हुई हैं। 'उच्च शिक्षा की रूपरेखा' तैयार करने निमित्त पिछले महीने 4–5 मार्च को हमने कार्यशाला आयोजित की थी और अब चरणबद्ध रूप से हम उन आवश्यकताओं को पूरा करने में अपने प्रयत्नों को केन्द्रित कर रहे हैं, जिनकी बदौलत उच्च शिक्षा एक सही और सार्थक लक्ष्य हासिल कर पायेगी।

इस क्रम में हमने 4–5 अप्रैल को 'नैक जागरूकता एवं प्रशिक्षण कार्यशाला' ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के संयोजन में सम्पन्न करायी है। इस कार्यशाला को संबोधित करते हुए महामहिम राज्यपाल ने इस बात पर संतोष व्यक्त किया था कि राज्य के सभी 260 अंगीभूत महाविद्यालयों और 12 विश्वविद्यालयों ने 'AISHE' में अपना निबंधन कराते हुए आई॰डी॰ प्राप्त कर लिया है तथा आई॰आई॰क्यू॰ए॰ एवं 'सेल्फ स्टडी रिपोर्ट' (SSR) दाखिल करने की दिशा में सतत आगे बढ़ रहे हैं। वस्तुतः सभी विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों को त्वरित रूप से 'नैक प्रत्ययन' की दिशा में आगे कदम बढ़ाने होंगे। इसके लिए विश्वविद्यालय स्तर पर नियमित साप्ताहिक अनुश्रवण होते रहना चाहिए। राजभवन भी समय–समय पर तैयारियों की समीक्षा करेगा। हमें विश्वास है कि इस वर्ष राज्य के सभी विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय 'नैक प्रत्ययन' के प्रति पूरी संजीदगी एवं तत्परता दिखायेंगे।

इसी तरह मौजूदा शैक्षणिक वर्ष से हमें 'University Management Information System -UMIS' का कार्यान्वयन हर हालत में सुनिश्चित करना है, ताकि विश्वविद्यालयों की गतिविधियों में गतिशीलता और पारदर्शिता आ सके। विगत 11–12 अप्रैल को केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय एवं राजभवन के संयुक्त तत्वावधान में पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना द्वारा संयोजित ''उच्च शिक्षा में डिजिटल पहल'' विषयक दो दिवसीय कार्यशाला से भी राज्य के सभी विश्वविद्यालयों को काफी बेहतर मार्ग–दर्शन प्राप्त हुआ है, जिससे विश्वविद्यालयों के डिजिटीकरण में तेजी आएगी।

इस वर्ष पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना के तत्वावधान में अंतर्विश्वविद्यालयीय सांस्कृतिक प्रतियोगिता– 'तरंग' का आयोजन होना है तथा अन्तर्विश्वविद्यालयीय क्रीड़ा–प्रतियोगिता 'एकलव्य' भागलपुर में तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय संयोजित करेगा। प्रारंभिक स्तर पर ये प्रतियोगिताएँ पहले कॉलेज स्तर पर सम्पन्न होंगी, फिर चयनित कलाकार व खिलाड़ी अपने–अपने विश्वविद्यालयों का प्रतिनिधित्व करते हुए मुख्य राज्यस्तरीय प्रतियोगिता में भाग लेंगे। इन प्रतियोगिताओं के आयोजन हेतु हमें अभी से तत्पर और सक्रिय हो जाने की जरूरत है।

मुझे आशा है, काफी संख्या में हमारे युवा विद्यार्थियों एवं राज्य के पूरे विश्वविद्यालय– परिवार ने लोकतंत्र के महापर्व 'लोकसभा चुनाव' में भाग लेते हुए विवेकपूर्ण मतदान किया होगा, जिसकी बदौलत भारतवर्ष का प्रजातंत्र और अधिक सुदृढ़ हो सकेगा।

शुभकामनाओं सहित,

(विवेक कुमार सिंह)
राज्यपाल के प्रधान सचिव

वर्ष-2, अंक-5, मई 2019
प्रधान सम्पादक
विवेक कुमार सिंह

कार्यकारी सम्पादक
विनोद कुमार

सम्पादक मंडल
संजय कुमार
सुनील कुमार पाठक

सम्पादकीय पता: जन-सम्पर्क शखा, राजभवन, पटना-22
ई मेल- pr.rajbhavan@gmail.com
दूरभाष- 0612-2786119

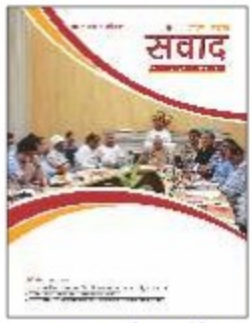

इस अंक में

- नये भारत में वैज्ञानिक ज्ञान और तकनीकी योग्यता की महत्ता काफी बढ़ गयी है–राज्यपाल
- राज्यपाल की अध्यक्षता में उच्च शिक्षा के विकास–प्रयासों की समीक्षा हेतु उच्चस्तरीय बैठक
- 'नैक' जागरूकता एवं प्रशिक्षण कार्यशाला हुई आयोजित
- राज्यपाल ने "उच्च शिक्षा में डिजिटल पहल" विषयक कार्यशाला का उद्घाटन किया
- राजभवन में महामहिम राज्यपाल के जन्मदिन के उपलक्ष्य में दिव्यांग बच्चों द्वारा आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये
- महामहिम राज्यपाल को उनके जन्मदिन पर कई जन–प्रतिनिधियों, शिक्षाविदों, धर्मगुरुओं, सामाजिक–आर्थिक संगठनों के पदाधिकारियों–प्रतिनिधियों, गणमान्य जन, बुद्धिजीवियों आदि ने मिलकर बधाई एवं शुभकामनाएँ दी
- 'नैक' विषयक दो दिवसीय कार्यशाला का समापन–समारोह
- विश्वविद्यालय परिसर
- विविधा

राज्यपाल की अध्यक्षता में उच्च शिक्षा के विकास-प्रयासों की समीक्षा हेतु उच्चस्तरीय बैठक

उच्च शिक्षा के विकास–प्रयासो की समीक्षा हेतु राजभवन में आयोजित बैठक को संबोधित करते हुए राज्यपाल श्री लाल जी टंडन – 29 अप्रैल 2019

महामहिम राज्यपाल श्री लाल जी टंडन की अध्यक्षता में उच्च शिक्षा के विकास–प्रयासों को गति प्रदान करने के उद्देश्य से 29 अप्रैल को एक उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक हुई, जिसमें राज्य के मुख्य सचिव श्री दीपक कुमार, विकास आयुक्त श्री सुभाष शर्मा, अपर मुख्य सचिव, शिक्षा विभाग श्री आर॰के॰ महाजन, राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री विवेक कुमार सिंह, स्वास्थ्य विभाग एवं मंत्रिमंडल सचिवालय व समन्वय विभाग के प्रधान सचिव श्री संजय कुमार, कला, संस्कृति एवं युवा विभाग के प्रधान सचिव श्री रवि मनुभाई परमार, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के सचिव श्री अनुपम कुमार, पटना विश्वविद्यालय, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, मौलाना मजहरूल हक अरबी–फारसी विश्वविद्यालय, आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय एवं नालंदा खुला विश्वविद्यालय, पटना के कुलपतियों सहित उच्च शिक्षा विभाग, ब्रेडा, भवन निर्माण विभाग, वन एवं पर्यावरण विभाग, राज्यपाल सचिवालय आदि के कई वरीय अधिकारीगण उपस्थित थे।

बैठक को संबोधित करते हुए राज्यपाल श्री टंडन ने कहा कि राज्य में उच्च शिक्षा क्षेत्र में किए जा रहे सुधार–प्रयासों को राष्ट्रीय स्तर पर भी लोग महसूस करने लगे हैं, परन्तु यह आवश्यक है कि हम उच्च शिक्षा के विकास–प्रयासों को और अधिक तेज करें। उन्होंने कहा कि बैठकों में जो निर्णय लिए जाते हैं, जो नीतियाँ निर्धारित होती हैं, उनपर पूरी तरह अमल होना और इसकी सतत् मोनिटरिंग के लिए तंत्र विकसित किया जाना बेहद जरूरी है। राज्यपाल ने कहा कि यह संतोष की बात है कि वर्तमान शैक्षणिक सत्र में दो को छोड़कर सभी विश्वविद्यालयों के 'दीक्षांत समारोह' आयोजित करते हुए डिग्रियाँ वितरित कर दी गई हैं। उन्होंने कहा कि यह मौजूदा सुधार–प्रयासों का ही नतीजा है। श्री टंडन ने कहा कि शेष दो विश्वविद्यालयों में भी शीघ्र ही 'दीक्षांत समारोह' आयोजित होंगे।

राज्यपाल ने कहा कि वे अनुशासनहीनता और भ्रष्ट आचरण को हरगिज बर्दाश्त नहीं करेंगे। उन्होंने कहा कि प्रमाण–पत्रों के वितरण में अनियमितता की शिकायत मिलते ही अविलंब कार्रवाई की गई है और 8 मई, 2019 तक सभी विश्वविद्यालयों को पारदर्शितापूर्वक प्रमाण–पत्रों का वितरण सुनिश्चित करने को कहा गया है। साथ ही, भविष्य में प्रमाण–पत्रों हेतु ऑनलाईन आवेदन की प्रक्रिया मई से ही प्रारंभ करायी जा रही है, ताकि पारदर्शितापूर्वक सभी विद्यार्थियों को प्रमाण–पत्र शीघ्र मिल जायें।

राज्यपाल ने कहा कि शोध–कार्यों में गुणवत्ता लाना जरूरी है तथा विश्वविद्यालय की तमाम गतिविधियों का डिजिटलीकरण जरूरी है। राज्यपाल ने कुलपतियों को निदेशित किया कि UMIS (University Management

Information System) के लिए प्रारंभिक तौर पर राज्य सरकार से प्राप्त 10 लाख रूपये की राशि का सदुपयोग करते हुए उपयोगिता प्रमाण–पत्र के साथ वे आवश्यक अतिरिक्त आबंटन की माँग शिक्षा विभाग से करें।

राज्यपाल ने कहा कि बायोमैट्रिक हाजिरी के उपकरण केवल शोभा की वस्तु नहीं होने चाहिए। बायोमैट्रिक–उपकरणों से रिपोर्टें लेकर उनका विश्लेषण करते हुए अनुपस्थित शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मियों के विरूद्ध सख्त कार्रवाई होनी चाहिए, ताकि प्रावधानों के अनुरूप कार्य–दिवसों में शिक्षक कम–से–कम 5 घंटे की उपस्थिति अपने शिक्षण संस्थानों में सुनिश्चित कर सकें।

राज्यपाल ने कहा कि चिकित्सा शिक्षा तथा तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा में भी आधारभूत संरचना विकास तथा सतत् अनुश्रवण की व्यवस्था सुनिश्चित होनी चाहिए।

बैठक को संबोधित करते हुए मुख्य सचिव श्री दीपक कुमार ने कहा कि उच्च शिक्षा के विकास हेतु सभी कुलपतियों को अपने शिक्षण संस्थानों में अध्ययन–अध्यापन के अनुकूल वातावरण विकसित करते हुए नियमित शिक्षण की गतिविधियाँ सुनिश्चित करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि ट्यूटोरियल क्लासेज, पुस्तकालय, प्रयोगशालाओं आदि पर पूरा ध्यान दिया जाना चाहिए। मुख्य सचिव श्री कुमार ने कहा कि उच्च शिक्षा के सभी घटकों–शिक्षक, विद्यार्थी, शिक्षकेत्तरकर्मी, सरकारी विभाग, आदि –सबको अपने दायित्वों के प्रति तत्पर और अपनी जिम्मेवारियों के प्रति पूर्ण सजग रहना होगा।

मुख्य सचिव ने बैठक में निदेशित किया कि सभी विश्वविद्यालय/महाविद्यालय परिसरों में किसी भी प्रकार के संचालित निर्माण–कार्यों में कार्यकारी एजेन्सियों को तबतक भुगतान नहीं होना चाहिए, जबतक संबंधित संस्थान के प्रधान का अभिप्रमाणन प्राप्त नहीं हो जाता। मुख्य सचिव ने शिक्षा विभाग को इस संबंध में शीघ्र आदेश निर्गत करने को कहा। बैठक में पटना विश्वविद्यालय के कुलपति ने विश्वविद्यालय परिसर में बने दो छात्रावासों के निर्माण–कार्य, उपस्कर–व्यवस्था तथा प्राचीन इतिहास विभाग में हुए निर्माण कार्यों के प्रति असंतोष व्यक्त किया, जिसपर ध्यान देते हुए मुख्य सचिव ने उपर्युक्त निदेश प्रदान किया।

बैठक को संबोधित करते हुए विकास आयुक्त श्री सुभाष शर्मा ने विश्वविद्यालयों में शोध–कार्यों में गुणवत्ता–विकास के लिए पुस्तकालयों में नये–नये जरनल, नयी किताबें आदि मँगाने पर जोर दिया।

बैठक में विश्वविद्यालयों से शीघ्र सहायक प्राध्यापकों की रोस्टर सहित रिक्तियाँ माँगने का भी निर्णय लिया गया ताकि नवगठित 'बिहार राज्य विश्वविद्यालय सेवा आयोग' के माध्यम से नियुक्ति–प्रक्रिया यथासमय प्रारंभ करायी जा सके। बैठक में विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में आई॰टी॰ मैनेजर एवं डाटा इन्ट्री ऑपरेटरों के पद–सृजन पर भी गंभीरता से विचार किया गया। साथ ही, नियमित प्राचार्यों की नियुक्ति, विश्वविद्यालय शिक्षकों की प्रोन्नति आदि पर भी गंभीरता से विमर्श हुआ।

बैठक में निर्णय लिया गया कि विश्वविद्यालयों में आऊटडोर स्टेडियम, इंडोर स्टेडियम, ऑडोटोरियम एवं स्वीमिंग पुल आदि बनवाने के लिए भी शिक्षा विभाग एवं कला, संस्कृति एवं युवा विभाग आवश्यक कार्रवाई करेंगे।

बैठक में 'विश्वविद्यालय प्रशासनिक सेवा' एवं 'विश्वविद्यालय वित्त सेवा' गठित करने पर भी चर्चा हुई, ताकि कुलसचिव, वित्त पदाधिकारी एवं वित्त परामर्शी आदि पदों पर नियमित नियुक्तियाँ हो सकें।

बैठक में अपर मुख्य सचिव, शिक्षा ने बताया कि लगभग 35 महाविद्यालयों के मान्यता से संबंधित प्रस्तावों को उन्होंने अनुकूल नहीं पाते हुए इनपर आवश्यक जानकारियाँ हासिल करने को कहा है। उन्होंने बताया कि शीघ्र ही इनपर निर्णय ले लिया जायेगा। राज्यपाल ने कहा कि जिन कॉलेजों को राज्य सरकार से मान्यता नहीं मिलती है, उनमें किसी भी परिस्थिति में नामांकन नहीं हो –ऐसा सभी विश्वविद्यालय सुनिश्चित करें।

बैठक में पटना विश्वविद्यालय को कहा गया कि वह 'National Institutional Ranking Framework – NIRF' के लिए अपना प्रस्ताव तैयार करे। बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि राज्य के कुछ प्रमुख महाविद्यालयों को 'Centre of Excellence' के रूप में इस प्रकार विकसित किया जायेगा ताकि वे देश के शीर्षस्थ 100 कॉलेजों में अपना स्थान बना सकें।

बैठक में नवस्थापित विश्वविद्यालयों में आधारभूत संरचना– विकास, विश्वविद्यालयों में वित्तीय प्रबंधन हेतु कुशल तंत्र विकसित करने, पूर्व की भाँति विश्वविद्यालयों को 'तरंग' एवं 'एकलव्य' प्रतियोगिताओं के आयोजन हेतु वित्तीय सहायता करने, विश्वविद्यालय–महाविद्यालयों में 'हर परिसर हरा परिसर' कार्यक्रम को वन विभाग के साथ समन्वय बनाकर सफलतापूर्वक संचालित करने, सभी विश्वविद्यालयों एवं बड़े कॉलेजों में सोलर पावर प्लांट संस्थापित करने आदि विषयों पर भी व्यापक चर्चा हुई तथा संबंधित विभागों को इनके लिए आवश्यक कार्रवाई के निदेश दिये गये। राजभवन स्थित राजेन्द्र मंडप, दरबार हॉल आदि के सुदृढ़ीकरण एवं सौन्दर्यीकरण का भी निर्णय लिया गया।

'नैक' जागरूकता एवं प्रशिक्षण कार्यशाला हुई आयोजित

नैक प्रत्ययन विषयक कार्यशाला का उद्घाटन करते राज्यपाल श्री लाल जी टंडन – 4 अप्रैल 2019

''राज्य में उच्च शिक्षा के विकास हेतु संसाधनों या वित्तीय सहायता में कोई कमी नहीं होने दी जायेगी, परन्तु जो विश्वविद्यालय या महाविद्यालय अपने दायित्वों को नहीं समझेंगे तथा विकास–प्रयासों को कार्यान्वित करने में लापरवाही बरतेंगे, उनके विरूद्ध आवश्यक कार्रवाई भी की जायेगी'' –उक्त विचार, महामहिम राज्यपाल श्री लाल जी टंडन ने राजभवन के राजेन्द्र मंडप में दो दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किये। ''नैक जागरूकता एवं प्रशिक्षण कार्यशाला'' का औपचारिक उद्घाटन करते हुए राज्यपाल ने स्पष्ट तौर पर कहा कि राज्यपाल या कुलाधिपति जैसे शीर्ष पद से आमतौर पर आदेश मिलते हैं; परन्तु आज सभी कुलपतियों या प्राचार्यों से अगर अनुरोध किया जा रहा है तो इसका सीधा संदेश यही है कि इन्हें अपने दायित्वों के प्रति भी पूर्ण सजग और तत्पर रहना होगा। राज्यपाल ने कहा कि पद की गरिमा के अनुरूप सभी शीर्ष विश्वविद्यालयीय अधिकारियों और प्राचार्यों से कर्त्तव्यपरायणता और आदर्श आचरण की उम्मीद की जाती है।

राज्यपाल ने कहा कि यह संतोषजनक है कि राज्यपाल सचिवालय और राज्य के शिक्षा विभाग की आशाओं के अनुरूप सभी विश्वविद्यालय सुधार–प्रयासों के क्रम में लिए गये निर्णयों पर तेजी से आज अमल कर रहे हैं।

राज्यपाल श्री टंडन ने कहा कि बिहार का उच्च शिक्षा में पूर्व में भी गौरवपूर्ण इतिहास रहा है। अपनी प्राचीन गरिमा के अनुरूप तथा आधुनिक मानदंडों पर खरे उतरने के लिए विश्वविद्यालयों को गुणवत्तापूर्ण और शोधमूलक शिक्षा के विकास पर ठोस पहल करनी होगी। श्री टंडन ने कहा कि 'नैक प्रत्ययन' (NAAC Accreditation) के लिए किए जा रहे प्रयास उसी दिशा में एक सार्थक और महत्वपूर्ण कदम हैं। राज्यपाल ने इस बात पर संतोष व्यक्त किया कि आज राज्य के सभी 260 अंगीभूत महाविद्यालयों एवं 12 विश्वविद्यालयों ने 'AISHE' में अपना निबंधन कराते हुए आई.डी. प्राप्त कर लिया है तथा अब आगे आई.आई.क्यू.ए. एवं 'S.S.R' (सेल्फ स्टडी रिपोर्ट) दाखिल करने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं।

राज्यपाल ने कहा कि अबतक राज्य में सिर्फ 95 अंगीभूत महाविद्यालयों को ही 'नैक प्रत्ययन' प्राप्त है। उन्होंने कहा कि इन्हें भी अपनी ग्रेडिंग में बेहतरी लाने की कोशिश करनी चाहिए।

उद्घाटन–सत्र को संबोधित करते हुए राज्य के मुख्य सचिव श्री दीपक कुमार ने कहा कि आज राज्य के विश्वविद्यालयों में आधारभूत संरचना विकास के काम तेजी से चल रहे हैं। आवश्यकता है, कि उच्च शिक्षा के सभी घटकों के बीच कार्य के प्रति प्रतिबद्धता हेतु 'MoU' हस्ताक्षरित हो तथा सभी निर्धारित समय–सीमा के भीतर अपने दायित्वों का निर्वहन करें।

कार्यक्रम में बोलते हुए शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव श्री आर.के. महाजन ने बताया कि राज्य सरकार ने उच्च शिक्षा के विकास पर लगभग 4–5 हजार करोड़ रूपये व्यय किए हैं। उन्होंने बताया कि 'UMIS' के कार्यान्वयन हेतु प्रथम किश्त के रूप में प्रति विश्वविद्यालय 10 लाख रूपये उपलब्ध कराये गए हैं।

कार्यशाला को संबोधित करते हुए यू.जी.सी. के सचिव श्री रजनीश जैन ने विस्तार से यू.जी.सी. की उन नयी योजनाओं की जानकारी दी, जिनका लाभ उठाकर विश्वविद्यालय गुणवत्ता विकसित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि आज यू.जी.सी. छात्रोपयोगी योजनाओं को प्राथमिकतापूर्वक कार्यान्वित करने पर ज्यादा जोर दे रही है।

कार्यशाला को संबोधित करते हुए राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री विवेक कुमार सिंह ने कहा कि उच्च शिक्षा क्षेत्र में 'शैक्षणिक अंत्योदय' की अवधारणा को मूर्त रूप देने के लिए जरूरी है कि हम पहले सभी उच्च शिक्षा केन्द्रों में मूलभूत जरूरतों (Basic Needs) को पूरा करते हुए आधुनिक सभी मानदंडों पर विकास के लिए चरणबद्ध प्रयास करें।

कार्यक्रम में राजभवन में उच्च शिक्षा परामर्शी प्रो. आर.सी. सोबती ने 'नैक प्रत्ययन' के साथ–साथ विश्वविद्यालयों को अपनी सामाजिक भूमिका और दायित्वों को पूरा करने के लिए आगे आने को कहा ।

कार्यक्रम में धन्यवाद–ज्ञापन कार्यशाला–संयोजक ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा के कुलपति प्रो. एस.के. सिंह ने करते हुए इस कार्यशाला की उपयोगिता पर भी प्रकाश डाला। उद्घाटन–सत्र का संचालन ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के अध्यक्ष (छात्र कल्याण) प्रो. रतन कुमार चौधरी ने किया।

कार्यक्रम के तकनीकी सत्र को संबोधित करते हुए 'नैक' के पूर्व सलाहकार डॉ. बी.एस. मधुकर ने कहा कि 'नैक प्रत्ययन' के विभिन्न चरणों में बेहतर प्रदर्शन के लिए जरूरी है कि सभी विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय सतत् जागरूक रहें और निदेशों के अनुपालन के प्रति तत्पर रहें। डॉ. बी.एस. मधुकर ने अपने प्रस्तुतीकरण में 'Revised Accreditation Framework of NAAC' के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए ऑन–लाईन फॉर्म भरने की पूरी प्रक्रिया से अवगत कराया। इस सत्र में प्रो. बी.बी.एल. दास ने भी अपने विचार रखे।

दूसरे तकनीकी सत्र का विषय था –'ICT Enabled RAF –प्रक्रिया एवं तैयारी' जिसपर 'नैक' सलाहकार डॉ. के. रमा (बेंगलुरू) ने अपने प्रस्तुतीकरण के जरिये उच्च शिक्षा में गुणवत्ता–विकास तथा 'नैक' के मानकों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने 'इन्फॉर्मेशन एण्ड कम्यूनिकेशन टेक्नोलॉजी' की महत्ता बताते हुए नैक–प्रत्ययन में इसकी भूमिका और उपयोग पर भी प्रकाश डाला।

कार्यशाला के तीसरे सत्र में 'इन्स्टीव्यूशनल इनफॉरमेशन फॉर क्वालिटी एसेसमेंट' (I.I.Q.A.) तथा 'सेल्फ स्टडी रिपोर्ट' (S.S.R.) में डाटा–टेम्पलेट्स के उपयोग पर प्रो. प्रतोष बंसल ने अपना प्रस्तुतीकरण दिया, जिसपर प्रो. आई.एन. मिश्रा ने भी अपने विचार रखे।

चौथे तकनीकी सत्र में 'Data Validation and Verification' (D.V.V.) की प्रक्रिया तथा 'Student Satisfaction Survey' (S.S.S.) पर 'नैक' सलाहकार डॉ. रूचि त्रिपाठी ने अपना प्रस्तुतीकरण दिया, जिसपर डॉ. अरविन्द कुमार झा ने अपने समन्वित विचार रखे।

कार्यशाला के आखिरी और पाँचवें सत्र में नैक के 'Functional Coordinator prospectives' तथा 'Experiences Sharing' पर डॉ. सरदार अरविन्द सिंह ने अपना प्रस्तुतीकरण दिया।

राज्यपाल ने 'उच्च शिक्षा में डिजिटल पहल' विषयक कार्यशाला का उद्घाटन किया

'उच्च शिक्षा में डिजिटल पहल' विषयक कार्यशाला में पुस्तक विमोचित करते हुए राज्यपाल श्री लाल जी टंडन – 11अप्रैल 2019

''बिहार में उच्च शिक्षा जगत् की चुनौतियों को स्वीकार करते हुए सुधार–प्रयास तेज कर दिये गये हैं। उच्च शिक्षा में गुणात्मक विकास करते हुए इसे शोधपरक और रोजगारोन्मुखी बनाने के लिए हर तरह के आधुनिक और समकालीन प्रयास किये जा रहे हैं।''– उक्त विचार, महामहिम राज्यपाल श्री लाल जी टंडन ने स्थानीय होटल मौर्या के सभागार में केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय एवं राजभवन के संयुक्त तत्वावधान में पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय द्वारा संयोजित 'उच्च शिक्षा में डिजिटल पहल'' विषयक दो दिवसीय (11–12 अप्रैल) कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किये।

राज्यपाल ने कहा कि उच्च शिक्षा के विकास के बगैर किसी प्रदेश या राष्ट्र की प्रगति नहीं हो सकती। उन्होंने कहा कि ज्ञान–विज्ञान की आधुनिक प्रगति से जुड़ते हुए भी हमें अपनी जड़ों से भी जुड़ना होगा। जड़ों से जुड़ने का मतलब अपनी समृद्ध परम्पराओं और विरासतों से जुड़ना है। उन्होंने कहा कि भारतीय वैदिक वांगमय में भी वैज्ञानिकता की पर्याप्त पुट है। उन्होंने कहा कि सुश्रुत को 'सर्जरी' का जनक' माना जाता है। कौटिल्य अर्थशास्त्र के प्रकांड विद्वान थे तथा आर्यभट्ट गणित के उद्भट विद्वान थे। राज्यपाल ने कहा कि प्राचीन भारत की ज्ञान–समृद्धि मूलतः बिहार की दार्शनिक एवं सांस्कृतिक वैभव पर आधारित है। उन्होंने कहा कि बिहार के नालंदा एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालय आदि पूरे विश्व में उच्च शिक्षा के केन्द्र के रूप में विख्यात रहे हैं। राज्यपाल ने कहा कि हमें पुनः अपनी वैश्विक प्रतिष्ठा हासिल करनी है।

राज्यपाल श्री टंडन ने कहा कि 'सी॰बी॰सी॰एस॰', 'यू॰एम॰आई॰एस॰' एवं नैक के बाद हम डिजिटलीकरण की ओर तेजी से कदम बढ़ायेंगे। उन्होंने कहा कि डिजिटीकरण से पूरे विश्व की ज्ञान–संपदा के सम्पर्क में हमारे शिक्षक एवं छात्र आएँगे तथा कार्यों में तत्परता, तेजी और पारदर्शिता बढ़ेगी। राज्यपाल ने उपनिषदीय सूक्ति को उद्धृत करते हुए कहा कि ''यह समय 'उठने, जगने, ज्ञान प्राप्त करने तथा प्राप्त ज्ञान से सबको लाभान्वित करने का समय है।'' उन्होंने कहा कि हमें निरंतर आगे बढ़ते रहने –'चरैवैति चरैवैति' की शिक्षा अपनी संस्कृति से मिलती है। श्री टंडन ने कहा कि हमें अपनी ज्ञान–संपदा और विरासतों का भरपूर उपयोग करना चाहिए तथा दुनियाँ के अन्य देशों की शिक्षा–व्यवस्था और आर्थिक समृद्धि से भी बराबर प्रेरणा लेनी चाहिए, ताकि हमारा समग्र विकास हो सके।

राज्यपाल ने कार्यक्रम में मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा प्रकाशित पुस्तक ''डिजिटल इनिसिएटिव्स इन हायर एजुकेशन' का भी विमोचन किया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राज्य के विकास आयुक्त श्री सुभाष शर्मा ने कहा कि शिक्षा सिर्फ परीक्षा और क्लासरूम तक सीमित रहनेवाली योग्यता नहीं है। उन्होंने कहा कि 'सा विद्या या विमुक्तये' का हमारा दर्शन आज भी प्रासंगिक है। शिक्षा हमारे ज्ञान–विस्तार और व्यक्तित्व–विकास की कुंजी है। उन्होंने कहा कि शोध शिक्षा का प्राण–तत्व है। हम सिर्फ सूचनाओं पर ही केन्द्रित नहीं रह सकते। सूचना–संग्रह से कहीं आगे जाकर, बैंकिंग अवधारणाओं से ऊपर उठकर हमें शिक्षा को बहुआयामी बनाना होगा। उन्होंने कहा कि शिक्षा का डिजिटलीकरण अभिवंचित और सुदूर बस्तियों तक ज्ञान को पहुँचाने का जरिया बन सकता है।

कार्यक्रम में बतौर प्रमुख वक्ता बोलते हुए आई॰आई॰टी॰, मद्रास से आये प्रो॰ मंगला सुन्दर ने कहा कि 'डिजिटीकरण' से संबंधित कार्यक्रम छात्रों के साथ–साथ शिक्षकों के लिए भी काफी उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक हैं। उन्होंने विस्तार से 'स्वयं', 'स्वयंप्रभा', 'एन॰डी॰एल॰आई॰', स्पोकेन ट्यूटोरियल एण्ड फोस्सी', वर्चुअल लैब,' 'अर्पित', 'नैड' (NAD), 'ए॰आई॰एस॰एस॰ई॰', 'एन॰आई॰आर॰एफ॰' आदि के बारे में कार्यशाला के प्रतिभागियों को बताते हुए इनसे लाभान्वित होने का अनुरोध किया।

कार्यक्रम में बोलते हुए राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री विवेक कुमार सिंह ने कहा कि बिहार में यह बेहद जरूरी है कि शिक्षक–छात्र क्लासरूम से अधिकाधिक रूप से जुड़े और परीक्षाएँ समय पर हों। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि डिजिटीकरण क्षेत्र में भी हम मौजूदा टीम के साथ बेहतर प्रदर्शन कर सकेंगे। कार्यक्रम में बोलते हुए राज्यपाल सचिवालय में उच्च शिक्षा परामर्शी श्री आर॰सी॰सोबती ने कहा कि डिजिटल पहलों के जरिये हम ज्ञान को सुदूर गाँवों में भी पहुँचा सकते हैं। कार्यक्रम में बोलते हुए सूचना प्रावैधिकी विभाग के सचिव श्री राहुल सिंह ने कहा कि राज्य के विश्वविद्यालयों में 'डिजिटीकरण' की प्रक्रिया पूरी करने के लिए राज्य सरकार हर संभव सहयोग करेगी।

कार्यक्रम में अर्चना शुक्ला, प्रो॰ सत्यकी, श्री नंद गोपाल, प्रो॰ कवि आर्या, उषा विश्वनाथन, डॉ॰ शालिनी, श्री जी॰एस॰ मलिक, डॉ॰ भट्टाचार्या आदि ने तकनीकी सत्रों के दौरान 'डिजिटीकरण' के विभिन्न पहलुओं का विस्तार से विश्लेषण किया।

कार्यशाला में धन्यवाद–ज्ञापन पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो॰ गुलाब चन्द राम जायसवाल एवं संचालन डॉ॰ तनुजा ने किया। समारोह में राज्य के विश्वविद्यालयों के कुलपति, प्रतिकुलपति, कुलसचिव एवं तकनीकी पदाधिकारी आदि उपस्थित थे।

इस अवसर पर संस्थान के रजिस्ट्रार प्रो॰ ए॰पी॰ कृष्णा, परीक्षा नियंत्रक प्रो॰ जे॰पी॰ पाण्डेय आदि भी उपस्थित थे। समारोह में महामहिम राज्यपाल को कुलपति ने अंगवस्त्रम एवं स्मृति–चिह्न भेंट कर उनका अभिनन्दन भी किया। कार्यशाला के अंतिम दिन समारोह को मानव संसाधन विकास मंत्रालय के संयुक्त सचिव श्री एन. श्रवण कुमार ने भी संबोधित किया।

राजभवन में महामहिम राज्यपाल के जन्मदिन के उपलक्ष्य में दिव्यांग बच्चों द्वारा आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये

दिव्यांग स्कूली बच्चों में अध्ययन–सामग्री वितरित करते हुए राज्यपाल श्री लाल जी टंडन – 11अप्रैल 2019

महामहिम राज्यपाल के 'जन्मदिन' (12 अप्रैल) के उपलक्ष्य में एक दिन पूर्व 'आशादीप' दिव्यांग पुनर्वास केन्द्र, दिग्घा (पटना) के बच्चों को राजभवन आमंत्रित कर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें बच्चों द्वारा दरबार हॉल में मनोरम सास्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गईं।

दिव्यांग बच्चों ने 'प्रार्थना गीत–नृत्य' से कार्यक्रम की शुरूआत की। उनका दूसरा समूह–गीत भारत की विविधता में एकता की छवि तथा कौमी एकजेहती को प्रतीकित करनेवाला था। कार्यक्रम में दिव्यांग बच्चों ने 'जन्मदिन शुभकामना–गीत' भी प्रस्तुत किया और महामहिम राज्यपाल के स्वस्थ और सुदीर्घ जीवन की मंगलकामना की।

कार्यक्रम में बच्चों को स्कूली परिधान, स्कूली बैग, टिफिन कैरियर, जूते–मोजे आदि उपयोगी सामाग्रियाँ प्रदान की गईं। महामहिम के साथ दिव्यांग बच्चों ने प्रीतिपूर्वक अल्पाहार ग्रहण किया और तस्वीरें खिचवायीं। राज्यपाल को 'आशादीप' के दिव्यांग बच्चों ने अपने द्वारा बनाई गईं कुछ तस्वीरें भी भेंट की।

महामहिम राज्यपाल श्री टंडन ने आयोजित कार्यक्रम के दौरान दिव्यांग बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि दिव्यांग बच्चों को किसी से दया, कृपा या सहानुभूति नही चाहिए, बल्कि समाज के अन्य सभी बच्चों की भाँति ये दिव्यांग बच्चे भी भरपूर स्नेह, शिक्षा और समग्र विकास के समुचित अवसर के वास्तविक हकदार हैं। राज्यपाल ने दिव्यांग बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि विश्व एवं भारतवर्ष में कई महापुरूष, संत, महात्मा, कवि, कलाकार एवं गायक दिव्यांग होने के बावजूद अपने–अपने क्षेत्र में काफी प्रतिष्ठित और प्रतिभावान रहे हैं। श्री टंडन ने कहा कि दिव्यांगता के बावजूद कई व्यक्तियों ने अपनी प्रतिभा के बल पर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर अपना तथा अपने देश और समाज का नाम रोशन किया है।

राज्यपाल ने अपने जन्मदिन के अवसर पर दिव्यांग बच्चों को सप्रेम राजभवन आमंत्रित करने का कारण बताते हुए कहा कि इससे पूरे समाज को दिव्यांग व्यक्तियों के प्रति स्नेह और समानता के भाव रखने की प्रेरणा मिलेगी। महामहिम राज्यपाल ने संस्था 'आशादीप' की सभी शिक्षिकाओं, प्रबंधन और बच्चों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वे बराबर अपने जन्मदिन सामाजिक सरोकार से जुड़े विषयों के प्रति जन–जागरूकता विकसित करने के जनहितकारी उद्देश्यों को लेकर मनाते आए हैं। उन्होंने कहा कि इस बार दिव्यांग बच्चों के बीच जन्मदिन मनाकर उन्हें बेहद संतोष और खुशी हुई है।

कार्यक्रम में 'आशादीप' दिव्यांग पुनर्वास केन्द्र की प्राचार्या सिस्टर लिस्सेल ने कहा कि आज महामहिम को उनके जन्मदिन के उपलक्ष्य में दिव्यांग बच्चों ने शुभकामनाएँ देकर उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया है। उन्होंने बताया कि केन्द्र के सभी 198 दिव्यांग बच्चों एवं शिक्षिकाओं को महामहिम ने उपयोगी कीट्स प्रदान किए हैं तथा इन सभी मूक–बधिर, मंदबुद्धि और बहुविध दिव्यांग बच्चों को स्नेहाशीष प्रदान किया है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम में 'आशादीप' के दिव्यांग विद्यार्थी– 11 अप्रैल 2019

महामहिम राज्यपाल को उनके जन्मदिन पर कई जन-प्रतिनिधियों, शिक्षाविदों, धर्मगुरूओं, सामाजिक-आर्थिक संगठनों के पदाधिकारियों-प्रतिनिधियों, गणमान्य जन, बुद्धिजीवियों आदि ने मिलकर बधाई एवं शुभकामनाएँ दी

अपने जन्मदिन पर राजवंशी नगर, पटना स्थित हनुमान मंदिर में पूजन करते हुए राज्यपाल श्री लाल जी टंडन– 12 अप्रैल 2019

महामहिम राज्यपाल श्री लाल जी टंडन ने अपने 83वें जन्मदिन (12 अप्रैल, 1935) के सुअवसर पर राज्य के कई गणमान्य जन, जन– प्रतिनिधियों, शिक्षाविदों, धर्म– गुरूओं, सामाजिक–आर्थिक संगठनों के पदाधिकारियों, प्रतिनिधियों, प्रशासनिक अधिकारियों, अधिवक्ताओं, चिकित्सकों, प्राध्यापकों, बुद्धिजीवियों आदि से राजभवन में मिलकर उनकी बधाई एवं शुभकामनाएँ स्वीकार की।

इसके पूर्व राज्यपाल श्री टंडन बेली रोड स्थित राजवंशी नगर श्री पंचमुखी हनुमान मंदिर गए, जहाँ उन्होंने भगवान हनुमान का दर्शन एवं पूजन–अर्चन किया तथा मानव–कल्याण और बिहार के समग्र विकास की कामना की। बाद में दरभंगा से आये संस्कृत के कई विद्वान आचार्यों ने राजभवन में 'स्वस्तिवाचन' कर महामहिम राज्यपाल के स्वस्थ, सुखी एवं सुदीर्घ जीवन की मंगलकामना की।

महामहिम राज्यपाल श्री लाल जी टंडन को उनके जन्मदिन पर महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द, माननीय उपराष्ट्रपति श्री वेंकैया नायडू सहित पूरे देश एवं प्रदेश के कई नेताओं ने दूरभाष पर भी बधाई एवं शुभकामनाएँ दी।

राज्यपाल श्री टंडन से इस अवसर पर राजभवन में कुम्हरार (पटना) के विधायक श्री अरूण कुमार सिन्हा सहित कई जनप्रतिनिधिगण, राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री विवेक कुमार सिंह, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, पूर्णिया विश्वविद्यालय, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, मुंगेर विश्वविद्यालय, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, मौलाना मजहरूल हक विश्वविद्यालय सहित अन्य कई विश्वविद्यालयों के कुलपतिगण तथा कई विश्वविद्यालयों, राज्यपाल सचिवालय, राज्य सरकार के कई अधिकारीगण, पदाधिकारीगण आदि ने भी मिलकर शुभकामनाएँ दी एवं उनका अभिवादन किया।

राज्यपाल से बी.आई.ए. एवं चैम्बर ऑफ कॉमर्स के पदाधिकारियों आदि ने श्री ओ.पी. शाह के नेतृत्व में मुलाकात की और उन्हें जन्मदिन की बधाई दी। रेडक्रॉस सोसाइटी बिहार ब्रांच के अध्यक्ष डॉ. विनय बहादुर सिन्हा, उपाध्यक्ष श्री उदय शंकर प्रसाद सिंह, बोहरा समाज के आमिल साहब, ईरशाद भाई शाह, वल्लीमुल्लाह साहब, मो. अबुल कलाम (भागलपुर) डॉ. आलमगीर शबनम (दरभंगा), मौलाना डॉ. अमानत हुसैन, मदरसा इस्लामिया, समसूल होदा के प्रिंसिपल डॉ. मसहूद अहमद, खानकाह चिस्तिया दानापुर के शाह विलाल रिजवी, फातिमा डिग्री–कॉलेज, फुलवारी शरीफ के सचिव अब्दुल्लाह साहब, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी की बी.के. काजल, ज्योति, अस्मिता, पूनम, प्रमोद एवं सुजीत, बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष श्री अनिल सुलभ, भारत तिब्बत सहयोग मंच के प्रदेश युवा अध्यक्ष श्री राजगौरव सिंह सहित सैकड़ों गणमान्य जन, मीडिया प्रतिनिधिगण एवं बुद्धिजीवियों आदि ने राजभवन में महामहिम राज्यपाल से मुलाकात कर अपनी शुभकामनाएँ एवं बधाई दी।

इसी दौरान महामहिम राज्यपाल श्री टंडन ने राजभवन के परामर्शी (उच्च शिक्षा) प्रो. आर.सी. सोबती एवं श्री विपिन सोबती द्वारा संपादित पुस्तक "Rejuvenating Higher Education –Ways to achieve excellence" का भी लोकार्पण किया। इस पुस्तक का प्रकाशन महामहिम राज्यपाल श्री टंडन के जन्मदिन पर उन्हें समर्पित है। बाद में राज्यपाल श्री टंडन अपने लखनऊ स्थित आवास पर आयोजित जन्मदिन समारोह में भी शाम में शामिल हुए।

महामहिम राज्यपाल श्री टंडन ने अपने जन्मदिन पर बधाई एवं शुभकामना देने आए सभी आगन्तुकों के प्रति आभार व्यक्त किया तथा उम्मीद जाहिर की कि बिहार राज्य सभी बिहारवासियों के सहयोग और प्रयासों से तेजी से प्रगति–पथ पर अग्रसर होगा।

जन्मदिन पर राज्यपाल को शुभकामनाएं देतीं 'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी' की बहनें– 12 अप्रैल 2019

'नैक' विषयक दो दिवसीय कार्यशाला का समापन

'नैक' विषयक कार्यशाला के समापन–समारोह को संबोधित करते हुए भा.सा.वि.अनु. परिषद के अध्यक्ष डॉ बी.बी. कुमार–5 अप्रैल 2019

"उच्च शिक्षा से जुड़े संस्थानों को समाज की विभिन्न समस्याओं के निराकरण हेतु सार्थक पहल करते हुए समुचित रास्ते सुझाने चाहिए। भारतीय विश्वविद्यालयों को देश और समाज की विभिन्न दुविधाओं, भ्रमों एवं आशंकाओं का निवारण करना चाहिए। विभिन्नता वाले भारत देश में यहाँ की एकात्मकता ही इसका वास्तविक सौन्दर्य और सामर्थ्य है।" –उक्त उद्‌गार, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली (I.C.S.S.R, New Delhi) के अध्यक्ष डॉ॰ बी॰बी॰ कुमार ने राजभवन में 'नैक जागरूकता एवं प्रशिक्षण कार्यशाला' के समापन–सत्र को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

डॉ॰ कुमार ने कहा कि उच्च शिक्षा क्षेत्र में शोध एवं अनुसंधान पर कुछ खास विश्वविद्यालयों के एकाधिकार को तोड़ने के लिए बिहार और उड़ीसा जैसे राज्यों के विश्वविद्यालयों को आगे आना चाहिए। उन्होंने कहा कि बिहार की छात्र एवं शिक्षक–प्रतिभाओं की उत्कृष्टता का कोई जबाब नहीं है। यहाँ के विद्यार्थी बाहर के विश्वविद्यालयों में अध्ययन कर काफी बेहतर प्रदर्शन करते हैं। आवश्यकता है कि इन्हें अपने राज्य के विश्वविद्यालयों में ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं पुस्तकालय–प्रयोगशाला आदि आधारभूत संरचनाओं की सुविधा मुहैया करायी जाये। डॉ॰ कुमार ने कहा कि 'नैक प्रत्ययन' आज सभी विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के लिए प्राथमिक एवं मूलभूत जरूरत बन गया है। इसी आधार पर 'यू॰जी॰सी॰', 'रूसा' एवं अन्य केन्द्रीय शैक्षणिक एजेन्सियों से वित्तीय सहयोग प्राप्त होता है। उन्होंने कहा कि केन्द्रीय एजेन्सियों से सहयोग प्राप्त किए बिना उच्च शिक्षा संस्थानों का समग्र विकास संभव नहीं है।

श्री कुमार ने कहा कि बिहार में उच्च शिक्षा को कुलाधिपति के मार्ग–दर्शन में एक सकारात्मक दिशा मिली है। उन्होंने कहा कि 'नैक प्रत्ययन' के लिए राजभवन की सार्थक पहल का ही नतीजा है कि सभी विश्वविद्यालयों के कुलपति एवं महाविद्यालयों के प्राचार्य सामूहिक रूप से एकत्रित होकर आज विशेषज्ञों के विचारों से लाभान्वित हो रहे हैं एवं पारस्परिक विचारों का भी आदान–प्रदान कर रहे हैं।

समापन–सत्र को संबोधित करते हुए राज्यपाल के उच्च शिक्षा परामर्शी प्रो॰आर॰सी॰ सोबती ने कहा कि बिहार में पिछले दिनों उच्च शिक्षा के विकास हेतु राज्यपाल के दिशा–निर्देश प्राप्त करते हुए काफी तेजी से प्रयास हुए हैं। उन्होंने कहा कि सभी विश्वविद्यालयों को पहले 'नैक प्रत्ययन' पूरी तत्परता से प्राप्त कर लेना चाहिए, फिर बाद में 'ग्रेड' में बेहतरी के लिए उनमें स्वतः समझ और ललक जग जायेगी।

समापन के अवसर पर कार्यशाला की सार्थकता का विश्लेषण करते हुए राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री विवेक कुमार सिंह ने कहा कि अपेक्षित पूर्ण उपस्थिति, प्रतिभागियों की एकाग्रता का स्तर, विषय की उपयोगिता और निष्कर्ष –इन चार मानकों पर ही किसी कार्यशाला की मूल्यवत्ता निर्धारित होती है। श्री सिंह ने कहा कि 'नैक' पर आधारित इस कार्यशाला को 500 से भी अधिक प्रतिभागियों की उपस्थिति, रिसोर्स पर्सन्स को सुनने में प्रतिभागियों की एकाग्रता और गंभीरता, विषय की समीचीनता और प्रतिफलन –चारों ही दृष्टियों से सफल माना जाएगा।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कार्यशाला के संयोजक एवं ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो॰ एस॰के॰ सिंह ने कहा कि यह कार्यशाला काफी फलदायी रही है और विशेषज्ञों ने भी काफी व्यावहारिक रूप से सभी प्रतिभागियों की नैक विषयक जिज्ञासाओं का समाधान किया है।

समापन–सत्र में ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा के प्रतिकुलपति डॉ॰ जयगोपाल ने कार्यशाला के सभी सत्रों की समेकित कार्य–विवरणी प्रस्तुत की। धन्यवाद–ज्ञापन ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के कुलसचिव कर्नल निशीथ कुमार राय ने किया जबकि संचालन प्रो॰ रतन कुमार चौधरी द्वारा हुआ।

इसके पूर्व आज कार्यशाला में 'नैक' प्रत्ययन हेतु ऑनलाईन भरे जानेवाले 'I.I.Q.A.' (इन्स्टीच्यूशनल इनफॉरमेशन फॉर क्वालिटी एसेसमेंट) और 'S.S.R. (सेल्फ स्टडी रिपोर्ट) की अपलोडिंग से संबंधित प्रायोगिक प्रशिक्षण भी नैक विशेषज्ञ प्रो॰ प्रतोष बंसल, डॉ॰ के॰ रमा, डॉ॰ बी॰एस॰ मधुकर एवं डॉ॰ रूचि त्रिपाठी द्वारा प्रदान किए गये।

कार्यशाला के प्रतिभागियों को तीन वर्गों में बाँटकर उन्हें व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किये गये। प्रथम वर्ग में वैसे अंगीभूत महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों को रखा गया था, जिन्हें पूर्व से ही नैक–प्रत्ययन प्राप्त है और जिन्हें अपनी ग्रेडिंग में बेहतरी की कोशिशें करनी हैं। दूसरे वर्ग में ऐसे अंगीभूत कॉलेज या यूनिवर्सिटी के 'नैक' के नोडल ऑफिसर प्रशिक्षण के लिए रखे गये थे, जिन्होंने आई॰आई॰क्यू॰ए॰ या 'एस॰एस॰आर॰ भर दिया है। तीसरे वर्ग में वैसे 'नैक' के लिए निबंधित कॉलेज शामिल थे, जिन्होंने आई॰आई॰क्यू॰ए॰ या एस॰एस॰आर॰ अबतक नहीं भरा है। तीसरे वर्ग के कई शिक्षण संस्थानों ने प्रशिक्षण के क्रम में ही अपना आई॰आई॰क्यू॰ए॰ भरने में सफलता हासिल कर ली। इस प्रायोगिक तकनीकी सत्र के समन्वयक डॉ॰ बी॰बी॰एल॰ दास थे। राजभवन के एन॰आई॰सी॰ प्रतिनिधि पदाधिकारी श्री विजय कुमार ने भी 'नैक' प्रत्ययन के क्रम में ऑन–लाईन दाखिल होनेवाले उक्त दोनों प्रपत्रों की अपलोडिंग के बारे में प्रतिभागियों को बताया। समापन सत्र में विश्वविद्यालयों के कुलपति, कुलसचिव, 'नैक' के नोडल पदाधिकारी, राज्यपाल सचिवालय के संयुक्त सचिव श्री विजय कुमार आदि भी उपस्थित थे।

'नैक' विषयक कार्यशाला के समापन–समारोह को संबोधित करते हुए राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री विवेक कुमार सिंह–5 अप्रैल 2019

विश्वविद्यालय परिसर

जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा

बाबू वीर कुँवर सिंह की जयन्ती

23 अप्रैल को भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के महान योद्धा वीर कुँवर सिंह की जयन्ती का आयोजन दीप प्रज्जवलन एवं माल्यार्पण के साथ प्रारंभ हुआ। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जगदम कॉलेज, छपरा के पूर्व प्राचार्य प्रो॰ के॰के॰द्विवेदी रहे। इस अवसर पर अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए उन्होंने बाबू वीर कुँवर सिंह के व्यक्तित्व के अनछुए पहलुओं को समीचीन बताया।

समारोह में कुलपति प्रो॰ हरिकेश सिंह ने वीर कुँवर सिंह जी जैसे महान चरित्रों की संक्षिप्त जीवनी प्रकाशित कराने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने इस दिवस को 'अवकाश दिवस' के रूप में नहीं, अपितु 'संकल्प दिवस' के रूप में मनाने का सुझाव दिया।

विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो॰ अशोक कुमार झा जी ने आग्रह किया कि हम समाज में जहाँ भी हैं अपने आस–पास तथा अपने बच्चों को वीर कुँवर सिंह जी के योगदान से परिचित कराना चाहिए। कार्यक्रम में श्री नरेन्द्र सिंह, डॉ॰ अमरेन्द्र झा, डॉ॰ लक्ष्मण सिंह, प्रो॰ अनिल कुमार सिंह, प्रो॰ अशोक कुमार मिश्र आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

पटना विश्वविद्यालय, पटना

जल–गुणवत्ता पर सेमिनार

पी॰यू॰ के वीलर सिनेट हॉल में जन्तु विभाग तथा UNICEF के संयुक्त तत्वावधन में जल की गुणवत्ता के सतत् प्रबंधन विषय पर एक दिवसीय सेमिनार 29 मार्च को आयोजित किया गया। इस अवसर पर मैग्सैसे पुरस्कार विजेता एवं जल पुरुष के नाम से प्रसिद्ध राजेन्द्र सिंह ने वैज्ञानिकों तथा शिक्षाविदों से जल संरक्षण की पुरानी शैलियों का प्रयोग करते हुए पृथ्वी को भविष्य में जल संकट से बचाने में योगदान देने को अपील की। उन्होंने इस अवसर पर गंगा सद्‌भावना' यात्रा का श्वेत–पत्र भी जारी किया। नालन्दा खुला विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो॰ रवीन्द्र कुमार सिन्हा ने भी सभी प्रकार के जल स्रोतों के प्रदूषण पर गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए बताया कि आज हिमालय के ग्लेशियर भी प्रदूषण

के शिकार हो गए हैं।

कुलपति प्रो॰ रास बिहारी प्रसाद सिंह ने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि पृथ्वी पर पर्याप्त मात्रा में जल उपलब्ध होते हुए भी दुष्प्रबंधन के कारण देश की बड़ी आबादी जल संकट से ग्रसित है। सेमिनार में प्रतिकुलपति प्रो॰ डॉली सिन्हा, पटना साइंस कॉलेज प्राचार्य प्रो॰ राधा कान्त प्रसाद, जन्तु विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो॰ अरविन्द कुमार तथा विकास पदाधिकारी प्रो॰ परिमल कु॰ खान ने भी संबोधित किया।

पर्वतारोही मिताली का अभिनन्दन

अफ्रीका की सबसे ऊँची पर्वत चोटी माऊंट किलिमंजारो पर सफल चढ़ाई करनेवाली पटना विश्वविद्यालय की छात्रा मिताली प्रसाद को 11 अप्रैल को वीलर सिनेट हॉल में कुलपति प्रो॰ रास बिहारी प्रसाद सिंह ने 35,000 रू॰ का चेक प्रदान करके सम्मानित किया।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यद्यपि पर्वतारोहण विश्वविद्यालय स्पोर्टस में शामिल नहीं है तथापि इसे एवं तैराकी दोनों को शामिल करने का प्रस्ताव राज्य सरकार को भेजा जाएगा। मिताली द्वारा किलिमंजारो पर्वत चोटी पर खिंचवाए गए चित्र में पी॰यू॰ लोगो स्पष्ट दिखायी दे रहा था जो विश्वविद्यालय के लिए गर्व की बात है।

बी. एन. मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा

'बीएनएमयू संगम का होगा प्रकाशन'

बीएनएमयू में खेल एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा देने हेतु कई कदम उठाए गए हैं। इसी कड़ी में विभिन्न उपलब्धियों को जन–जन तक पहुँचाने और संरक्षित करने के लिए क्रीड़ा एवं संस्कृति परिषद् से एक वार्षिक पत्रिका 'बीएनएमयू संगम' का प्रकाशन किया जाएगा।

'व्याख्यान आयोजित'

बी.एन. मंडल विश्वविद्यालय मधेपुरा के हिंदी विभाग में 17 मार्च को साहित्य का समाज दर्शन विषय पर पटना विश्वविद्यालय, पटना के हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ. शरदेंदु कुमार का एकल व्याख्यान हुआ। इस अवसर पर मानविकी संकायाध्यक्ष डॉ. ज्ञानंजय द्विवेदी, विभागाध्यक्ष डॉ. सीताराम शर्मा, डॉ. सिद्धेश्वर काश्यप, डॉ. दीपक प्रसाद, डॉ. जवाहर पासवान आदि उपस्थित थे।

'महिला फुटबॉल का आयोजन'

बीएनएमयू की अंगीभूत ईकाई के.

पी. कॉलेज, मुरलीगंज में 29 मार्च को महिला फुटबॉल मैच का आयोजन किया गया। यह मैच मुरलीगंज एवं मुजफ्फरपुर की टीम के बीच खेला गया।

इस अवसर पर प्रति कुलपति डॉ फारूक अली, यूभीके कॉलेज, कड़ामा के प्रधानाचार्य डॉ. माधवेन्द्र झा, खेल सचिव डॉ. अबुल फजल, सह सचिव डॉ. शंकर कुमार मिश्र, पीआरओ डॉ. सुधांशु शेखर आदि उपस्थित थे।

'नैक मूल्यांकन के प्रयास तेज'

राजभवन के निदेशानुसार बीएनएमयू के सभी अंगीभूत एवं संबद्ध महाविद्यालयों के नैक मूल्यांकन के प्रयास तेज कर दिए गए हैं। सभी महाविद्यालयों को अप्रैल में आईआईक्यूए में पंजीकरण कराने का निर्देश दिया गया है। इस बावत 10 अप्रैल को सभी अंगीभूत एवं संबद्ध महाविद्यालय के प्रधानाचार्यों एवं नोडल पदाधिकारियों की एक आवश्यक बैठक कुलपति डॉ. अवध किशोर राय की अध्यक्षता में केंद्रीय पुस्तकालय में संपन्न हुई। इस अवसर पर कुलपति ने सभी महाविद्यालयों को अविलंब नैक मूल्यांकन हेतु आईआईक्यूए के तहत पंजीयन कराने के निदेश दिए।

ति॰ माँ॰ भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

''बिहार की अर्थव्यवस्था : चुनौतियाँ एवं अवसरें'' –विषय पर सुन्दरवती महिला महाविद्यालय, भागलपुर में 27 अप्रैल को एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें प्रोफेसर लीला चंद साहा (कुलपति, तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय), डॉ॰ डी॰ एम॰ दिवाकर (पूर्व निदेशक, ए॰ एन॰ सिन्हा इन्स्टीच्यूट ऑफ सोशल स्टडीज), प्रोफेसर आर॰ डी॰ शर्मा (विख्यात अर्थशास्त्री) सहित कई शिक्षक, शिक्षिकाओं, प्राचार्या तथा छात्राओं ने अपनी भागीदारी दी। कुलपति प्रो॰ साहा ने कहा

कि 1980 के दशक तक राज्य की विकास दर देश के औसत विकास दर से कुछ ही कम थी। परन्तु 1990 के मध्य से यह अन्तर निरंतर बढ़ता गया। विगत दशक में राज्य में वार्षिक–विकास दर औसत 3% के आसपास रही है तथा प्रति व्यक्ति आय वृद्धि दर 18% आंकी गई है। बढ़ती हुई जनसंख्या का सीधा संबंध शिक्षा तथा आर्थिक विकास से है। बिहार की 80% आबादी खेती पर आश्रित है, परन्तु दुर्भाग्य की बात है कि यहाँ के किसानों को व्यापारियों तथा उद्योगपतियों की मर्जी से जीना पड़ता है। प्रशासनिक सुधार, भ्रष्टाचार का उन्मूलन, कुशल वित्तीय प्रबंधन, सेवा क्षेत्र का विस्तार, जनसंख्या पर नियंत्रण, औद्योगिकीरण, रोजगार सृजन, कौशल विकास तथा सरकार के सात निश्चयों के सही अनुपालन से बिहार की आर्थिक स्थिति में सुधार संभव है।

ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय

वनस्पतिशास्त्रा विभाग में दो दिवसीय यू.जी.सी. सम्पोषित राष्ट्रीय सेमिनार

दिनांक 29/03/2019 को ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय के वनस्पतिशास्त्र विभाग के सभागार में दो दिवसीय यू.जी.सी. सम्पोषित राष्ट्रीय सेमिनार का शुभारंभ माननीय कुलपति ल.ना.मि.वि. दरभंगा की अध्यक्षता में हुआ। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय प्रो. राजेश सिंह, कुलपति, पुर्णिया विश्वविद्यालय थे।

कुलपति ल.ना.मि.वि., प्रो. एस. के. सिंह ने सेमिनार के अध्यक्ष की हैसियत से अपना उदगार व्यक्त करते हुए इसकी भव्यता से प्रभावित होकर कहा कि इसी तरह के सेमिनार के आयोजन की अपेक्षा वि.वि. के अन्य विभागों से भी मैं रखता हूँ। उन्होंने पुनः कहा कि इस तरह के सेमिनार आयोजन से शैक्षणिक वातावरण को नयी ऊर्जा, दिशा तथा गतिशीलता मिलती है।

मुख्य अतिथि माननीय कुलपति प्रो. राजेश सिंह, पूर्णिया वि.वि. ने अपने उदबोधन में सेमिनार के विषय–वस्तु पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए सेमिनार को शोधार्थी, शिक्षक तथा छात्रों के लिए काफी अपयोगी बताया। उन्होंने कहा कि बिहार में जी.ई.आर. अन्य राज्यों की तुलना में काफी कम है। आवश्यकता है कि जागरुकता छात्रों में उत्पन्न की जाय।

सेमिनार की कनवेनर प्रो. शीला विभागाध्यक्ष, वनस्पति विभाग, ने आंगतुकों के स्वागत के दौरान सेमिनार के विषय पर संक्षेप में प्रकाश डाला। इसके बाद ऑर्गेनाइजिंग सेक्रेटरी डॉ. के. के. साहू ने सेमिनार की विषय–वस्तु को उपस्थापित किया। उन्होंने आगे कहा कि इस तरह के आयोजन से देश के विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे अनुसंधानों का आदान–प्रदान होता है, जिससे छात्रों, शोधार्थी तथा शिक्षकों को नया दिशा–निर्देश प्राप्त होता है। अन्त में कुलसचिव, ल.ना.मि.वि. कर्नल निशीथ राय ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

सेमिनार के दूसरे दिन कई कृषि वैज्ञानिकों ने नई शोध–प्रस्तुति की। सेमिनार के समापन सत्र में विशिष्ट स्थिति के रूप बिहार विश्वविद्यालय के भूतपूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर भोला नाथ वर्मा ने पौधे में बीमारियों और बिहार की स्थिति पर ध्यान आकर्षित किया। दूसरे दिन का आकर्षण शोध–छात्रों द्वारा शोध का पोस्टर–सेशन था, जिसमें 25 शोध छात्रों ने बहुत सुंदर तरीकों से प्रदर्शन किया गया था। इस प्रस्तुति में सर्वश्रेष्ठ तीन शोधकर्ताओं को प्राइज़ भी दिया गया। प्रथम पुरस्कार श्रुति मुखर्जी, द्वितीय पुरस्कार श्वेता गुप्ता तथा पुरस्कार आभा झा को मिला।

बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर

बिहार की शाही लीची को मिला भौगोलिक सूचकांक

बिहार की शाही लीची को अब राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिल चुकी है। बैद्धिक संपदा कानून के तहत शाही लीची को जीआई टैग (जियोग्राफिकल आइडेंटिफिकेशन) दिया गया है। बिहार कृषि विश्वविद्यालय के सहयोग से बिहार लीची उत्पादक संघ ने जून 2016 को जीआई रजिस्ट्री कार्यालय में शाही लीची के जीआई टैग के लिए आवेदन किया था जिसे भारत सरकार के भौगोलिक उपदर्शन रजिस्ट्री द्वारा विगत 5 अक्टूबर को प्रमाण–पत्र जारी कर दिया गया। बिहार को जीआई टैग मिल जाने से अब शाही लीची पर सिर्फ बिहार के किसानों का ही अधिकार होगा और देश विदेश में यह बिहार

के ब्रांड के तौर पर स्थापित होगा। जीआई टैग उसी उत्पाद को दिया जाता है, जो किसी विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र में उत्पन्न होता और जिसमें निहित विशेषताओं का उस स्थान विशेष में गहरा संबंध होता है। जीआई टैग को औद्योगिक संपत्ति के संरक्षण के लिए पेरिस कन्वेंशन के तहत बौद्धिक संपदा अधिकारों (आईपीआर) के एक घटक के रूप में शामिल किया गया है, राष्ट्रीय स्तर पर यह कार्य 'वस्तुओं का भौगोलिक सूचक' (पंजीकरण और संरक्षण) अधिनियम, 1999 के तहत किया जाता है, जो सितंबर 2003 से लागू हुआ था।

गौरतलब है कि इससे पहले भागलपुर के कतरनी चावल, जर्दालू आम और मगही पान को भी जीआई टैग इसी वर्ष दिया गया था। बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर राज्य के स्थानीय कृषि उत्पादों को भौगोलिक सूचकांक के माध्यम से संरक्षित एवं प्रचारित–प्रसारित करने का कार्य कर रहा है।

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय ने मनाया अपना 92वाँ स्थापना–दिवस

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के अंगीभूत कॉलेज बिहार वेटनरी कॉलेज, पटना का 92वाँ स्थापना दिवस मनाया गया, इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. प्रदीप कुमार दास, निदेशक आर.एम.आर. पटना, विशिष्ट अतिथि भूतपूर्व मेजर जनरल, पी.एस. नारवाल, मेडवेट कोलंबस अमेरिका से डॉ. राम मोहन और बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. रामेश्वर सिंह मौजूद थे।

विविधा

राज्यपाल से सी०आई०आई० के अधिकारी मिले

महामहिम राज्यपाल श्री लाल जी टंडन से 'कॉनफेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्री' (सी.आई.आई.) के अधिकारियों ने 26 अपैल को राजभवन आकर मुलाकात की तथा राज्य में औद्योगिक प्रगति की संभावनाओं और अपनी संस्था की उपलब्धियों पर आवश्यक विचार–विमर्श किया।

राज्यपाल श्री टंडन ने 'कॉनफेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्री' के अधिकारियों को राज्य में औद्योगिक प्रगति में अकादमिक संस्थाओं, विशेषकर राज्य के विश्वविद्यालयों से सहयोग और समन्वय प्राप्त करने का सुझाव दिया। राज्यपाल ने कहा कि बिहार राज्य जो एक कृषि प्रधान राज्य है और यहाँ की अर्थव्यवस्था भी कृषि पर आधारित है –को औद्योगिक दृष्टि से भी समुन्नत बनाने की आवश्यकता है, तभी इसका सर्वांगीण विकास संभव हो सकेगा। राज्यपाल ने कहा कि सी.आई.आई. एवं बी.आई.ए. जैसी संस्थाएँ राज्य के विश्वविद्यालयों के साथ समन्वय बनाते हुए युवा एवं कुशल उद्यमियों को समुचित रूप से प्रशिक्षित कर राज्य की औद्योगिक प्रगति को सुनिश्चित कर सकते हैं।

मुलाकात के दौरान राज्यपाल श्री टंडन ने सी.आई.आई. के अधिकारियों से कहा कि वे राज्य के औद्योगिक विकास तथा उसमें विश्वविद्यालयों की भूमिका को लेकर एक 'पावर प्रेजेन्टेशन' तैयार करें तथा समेकित रूप से अपने ठोस एवं सार्थक सुझाव रखें, ताकि उनपर सम्यक् रूप से गंभीरतापूर्वक विचार हो सके।

इस अनौपचारिक मुलाकत में सी.आई.आई. के अध्यक्ष श्री विनोद खेरिया, पूर्व अध्यक्ष श्री प्रभात कुमार सिन्हा, सदस्य श्री डी.पी. सिंह, श्रीमती उषा ज्ञा, श्री अरूण कुमार, श्री रोहित लाल आदि उपस्थित थे।

राज्यपाल से बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय एवं डॉ० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति मिले

महामहिम राज्यपाल–सह–कुलाधिपति श्री लाल जी टंडन से राजभवन में बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना के कुलपति डॉ. रामेश्वर सिंह एवं डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा (समस्तीपुर) के कुलपति डॉ. आर.सी. श्रीवास्तव ने राजभवन में मुलाकात की।

27 अप्रैल को हुई इस मुलाकात के दौरान अनौपचारिक विमर्श के अन्तर्गत बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. रामेश्वर सिंह ने राज्यपाल को बताया कि उनका विश्वविद्यालय राज्य में वैसी गायें जो प्रजनन क्षमताहीन हैं एवं किसानों की फसलों को नुकसान पहुँचाती हैं, के परिपोषण हेतु गाँवों में 'अभयारण्य' विकसित करने पर गंभीरता से विचार कर रहा है। उन्होंने यह भी बताया कि पशु विज्ञान विश्वविद्यालय 'Embryo Transfer Technology (E.T.T.)' के जरिये 'भ्रूण प्रत्यारोपण' करते हुए देशी गायों के नस्ल–सुधार हेतु भी प्रयास कर रहा है।

राज्यपाल ने दोनों विश्वविद्यालय के कुलपतियों को गोवंश के विकास तथा राज्य में पशुधन एवं पशु संसाधनों के विकास हेतु पूर्ण तत्पर रहने को कहा। उन्होंने कहा कि बिहार की आर्थिक समृद्धि सतरंगी कृषि के विकास पर ही निर्भर है। श्री टंडन ने कहा कि खाद्यान्न–उत्पादन के साथ–साथ दुग्ध–उत्पादन पर भी पर्याप्त ध्यान दिया जाना जरूरी है।

उक्त मुलाकात के दौरान विश्वविद्यालय के निदेशक शोध श्री रवीन्द्र कुमार एवं मत्स्य विशेषज्ञ डॉ. रमन कुमार त्रिवेदी भी उपस्थित थे।

बैंकों और स्वंयसेवी संस्थाओं द्वारा रेडक्रॉस सोसाइटी को पर्याप्त सहयोग मिलना चाहिए–राज्यपाल

महामहिम राज्यपाल श्री लाल जी टंडन ने कहा है कि बैंकिंग सेवाओं एवं अन्य स्वयंसेवी संस्थाओं को इंडियन रेडक्रॉस सोसाइटी, बिहार स्टेट ब्रांच को सहयोग करते हुए पीड़ित मानवता को राहत पहुँचाने में पूर्ण रूप से तत्पर और संवेदनशील होना चाहिए। राज्यपाल ने कहा कि बैंकिंग सेवाएँ आमतौर पर व्यावसायिक गतिविधियों का संचालन एवं लोगों को आवश्यकतानुसार वित्तपोषित करती हैं। उन्होंने कहा कि बैंकों को अपने लाभांश में से कुछ राशि विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं, दुर्घटनाओं आदि में पीड़ित लोगों को सहायता प्रदान करने हेतु व्यय करनी चाहिए। राज्यपाल ने राजभवन में 18 अप्रैल को पंजाब नेशनल बैंक द्वारा 'इंडियन रेडक्रॉस सोसाइटी, बिहार स्टेट ब्रांच' को तीन लाख रूपये बतौर सहयोग उपलब्ध कराये जाने के अवसर पर उक्त बातें, पी.एन.बी. और रेडक्रॉस सोसाइटी के पदाधिकारियों को संबोधित करते हुए कही।

राज्यपाल श्री टंडन ने कहा कि पी.एन.बी. को महान देशभक्त लाला लाजपत राय के सपनों के अनुरूप भारत को सशक्त और आर्थिक रूप से सुदृढ़ बनाने हेतु संकल्पित रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि इस बैंक को काफी उदारतापूर्वक रेडक्रॉस सोसाइटी को और अधिक दान करना चाहिए। श्री टंडन ने कहा कि रेडक्रॉस सोसाइटी, बिहार, स्वास्थ्य क्षेत्र में भी काफी बेहतर कार्य कर रही है, जिसमें पी.एन.बी. जैसे अन्य बैंक एवं स्वयंसेवी संस्थाएँ आधारभूत संरचना विकास में सहयोग कर सकती हैं।

कार्यक्रम में बोलते हुए पंजाब नेशनल बैंक के अंचल प्रबंधक श्री दिनेश कुमार पालीवाल ने कहा कि उनका बैंक आगे भी इंडियन रेडक्रॉस सोसाइटी, बिहार स्टेट ब्रांच को विभिन्न रूपों में सहयोग करता रहेगा। उन्होंने बताया कि तत्काल 3 लाख रू. की राशि से वे रेडक्रॉस सोसाइटी बिहार स्टेट ब्रांच को सी.बी.सी. (हेमाटोलॉजी–एनलाइजर) मशीन उपलब्ध करा देंगे ताकि रक्त–परीक्षण के कार्य में सोसाइटी चिकित्सालय को सुविधा हो।

विविधा

महामहिम राज्यपाल ने डॉ० जे०पी० सिंह लिखित तीन किताबों को लोकार्पित किया

महामहिम राज्यपाल श्री लाल जी टंडन ने राजभवन में 8 अप्रैल को पटना विश्वविद्यालय के पूर्व प्रतिकुलपति तथा उच्च शिक्षा के पूर्व निदेशक डॉ॰ जे॰पी॰ सिंह लिखित तीन पुस्तकों– "महाभारत एवं श्रीमद्भगवद्गीता –धर्म का समाज शास्त्रीय निरूपण", "संक्षिप्त श्रीमद्भगवद्गीता" तथा "Comprehensive Srimad Bhagavad Geeta"को लोकार्पित किया।

उक्त अवसर पर बोलते हुए राज्यपाल श्री टंडन ने कहा कि 'महाभारत' और 'रामायण' भारतीय संस्कृति के प्रतिनिधि ग्रंथ हैं। उन्होंने कहा कि 'श्रीमद्भगवद्गीता' भी भारतीय संस्कृति का एक ऐसा मर्यादा ग्रंथ है, जो कर्म के पथ पर चलकर कठिन–से–कठिन लक्ष्य हासिल करने की हमें प्रेरणा देता है।

उन्होंने कहा कि 'श्रीमद्भगवद्गीता' की लगभग सभी भारतीय भाषाओं और विश्व की भी लगभग सभी प्रमुख भाषाओं में अनुवादित होने के तथ्य के जरिये इसकी लोकप्रियता और प्रासंगिकता के सर्वदा अक्षुण्ण बने रहने की बात कही।

राज्यपाल ने कहा कि 'श्रीमद्भगवद्गीता' की हजारों टीकाएँ और भाष्य विभिन्न भाषा–भाषियों का पूरे विश्व में ज्ञान अभिवर्द्धित कर रहे हैं। इस क्रम में उन्होंने मनु शर्मा की पुस्तक 'कृष्ण की आत्मकथा' के विभिन्न खंडों का उल्लेख करते हुए इसे कृष्ण–कथा का अनुपम ग्रंथ बताया।

राज्यपाल ने कहा कि 'महाभारत' के संदर्भ में 'यन्न भारते तन्न भारते' की उक्ति प्रचलित है। अर्थात् जो 'महाभारत' में नही है, वह भारत में नही है।' –यानि भारत का सबकुछ 'महाभारत' में समाहित है। उन्होंने कहा कि यह ग्रंथ संपूर्ण मानवता के लिए एक दिव्य उपहार है।

राज्यपाल ने 'महाभारत' एवं श्रीमद्भगवद्गीता पर हिन्दी एवं अंग्रेजी में ग्रंथ–लेखन के लिए डॉ॰ जे॰पी॰ सिंह को बधाई एवं शुभकामनाएँ देते हुए उनके लेखन की समग्र सफलता की कामना की। राज्यपाल ने कहा कि इन ग्रंथों का समाजशास्त्रीय अध्ययन काफी उपयोगी सिद्ध होगा।

इस अवसर पर पुस्तकों के लेखक डॉ॰ जे॰पी॰ सिंह ने कहा कि "श्रीमद्भगवद्गीता' में प्रतिपादित जीवन–दर्शन पूरी मानवता का पथ–प्रदर्शक है। पुस्तक लोकार्पण के अवसर पर प्रो॰सतीश कुमार, प्रो॰ समीर कुमार शर्मा, प्रो॰ रामरतन सिंह तथा प्रो॰ संगीत कुमार आदि भी उपस्थित थे।

राज्यपाल ने सुप्रसिद्ध गजलकार एवं व्यंग्य–लेखक डॉ॰ शेरजंग गर्ग के निधन पर शोक–संवेदना व्यक्त की

महामहिम राज्यपाल श्री लाल जी टंडन ने सुप्रसिद्ध गज़लकार और व्यंग्य–लेखक डॉ॰ शेरजंग गर्ग के निधन पर अपनी शोक–संवेदना व्यक्त की है।

राज्यपाल श्री टंडन ने अपने शोकोद्गार में कहा कि स्व॰ डॉ॰ शेरजंग गर्ग ने भारत में ग़ज़ल विधा को एक नई ऊँचाई दी और उसे जन–सरोकारों से जोड़ने में अग्रणी भूमिका निभायी। 'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य' विषय पर शोध–प्रबंध प्रस्तुत करनेवाले डॉ॰ गर्ग ने 'व्यंग्य आलोचना के प्रतिमान' नामक एक गंभीर आलोचना–पुस्तक भी लिखी। उन्होंने व्यंग्य ग़ज़लों और शिशु गीतों की भी खूब रचना की। उनके व्यंग्य–लेखों के विषय भी सामायिक विषयों और सामाजिक सरोकारों से जुड़े रहते थे। कई मौलिक गद्य–पद्य रचनाओं का प्रणयन करने के साथ–साथ, डॉ॰ गर्ग ने कई संकलनों का संपादन भी किया।

राज्यपाल श्री टंडन ने कहा है कि स्व॰ डॉ॰ शेरजंग गर्ग के निधन से भारतीय साहित्य को अपूरणीय क्षति हुई है। राज्यपाल ने दिवंगत साहित्यकार की आत्मा को चिरशांति तथा उनके परिजनों और प्रशंसकों को धैर्य–धारण की क्षमता प्रदान करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की है।

राज्यपाल ने अंतर्विश्वविद्यालयीय प्रतियोगिता 'तरंग' और 'एकलव्य' आयोजित करने का दिया निदेश

महामहिम राज्यपाल–सह–कुलाधिपति श्री लाल जी टंडन के निदेशानुरूप सभी विश्वविद्यालयों के कुलपति को अपने विश्वविद्यालय के अन्तर्गत सांस्कृतिक एवं खेलकूद की गतिविधियों को तेज करने को कहा गया है। इस क्रम में, राज्यपाल सचिवालय द्वारा महामहिम राज्यपाल के आदेशालोक में इस वर्ष की अन्तर्विश्वविद्यालयीय सांस्कृतिक प्रतियोगिता 'तरंग' को पटना में आयोजित कराने का दायित्व पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना को प्रदान किया गया है, जबकि अन्तर्विश्वविद्यालयीय क्रीड़ा–प्रतियोगिता –'एकलव्य' का आयोजन भागलपुर में कराने हेतु तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति को प्राधिकृत किया गया है।

राज्यपाल सचिवालय ने पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय के कुलपति एवं तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति को निदेशित किया है कि वे विश्वविद्यालयीय अधिकारियों एवं सभी कॉलेजों के प्राचार्यों के साथ आयोजनगत तैयारियों को लेकर शीघ्र प्रारंभिक बैठक कर लें। साथ ही, निदेश में यह भी कहा गया है कि कॉलेज स्तर पर सांस्कृतिक प्रतियोगिताएँ एवं क्रीड़ा–स्पर्धाएँ आयोजित करने के लिए प्रतियोगिताओं का कैलेण्डर शीघ्र निर्धारित करते हुए सभी कुलपति राजभवन को प्रतिवेदित करें। पहले सांस्कृतिक प्रतियोगिताएँ आयोजित कराने के लिए कार्यक्रम–स्थल एवं विधाओं का भी निर्धारण कर दिया जाये। प्रतियोगिता की तिथियाँ परीक्षा–तिथियों को बचाकर निर्धारित की जायें। राज्यपाल सचिवालय ने कहा है कि देशभक्ति, प्रकृति–वर्णन, लोक संस्कृति, समाज–सुधार आदि विषयों को विशेष रूप से शामिल किया जाये। एकल गीत, समूह गीत, एकल नृत्य, समूह नृत्य, एकांकी, लोकनृत्य, शास्त्रीय संगीत, भाषण, काव्यपाठ, मोनोड्रामा आदि विधाओं में छात्र–छात्राओं के बीच से कलाकार–प्रतिभाएँ महाविद्यालय स्तर पर पहले चयनित करते हुए अन्तर्विश्वविद्यालयीय 'तरंग' प्रतियोगिता राजधानी पटना में आयोजित करने का निदेश देते हुए राज्यपाल सचिवालय द्वारा कहा गया है कि 'तरंग' प्रतियोगिता के जरिये बिहार की सांस्कृतिक विरासत एवं समृद्धि को प्रदर्शित करना प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए।

क्रीड़ा–प्रतियोगिता –एकलव्य' को भागलपुर में आयोजित कराने के पूर्व खेलकूद प्रतियोगिताएँ भी पहले महाविद्यालय स्तर पर सम्पन्न होंगी।

राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री विवेक कुमार सिंह ने बताया कि राजभवन में आयोजित होनेवाली कुलपतियों की आगामी बैठक में समीक्षा के प्रमुख विन्दुओं के तौर पर इन दोनों प्रतियोगिताओं के आयोजन को शामिल किया जायेगा। संबंधित दोनों कुलपतियों को कहा गया है कि वे अपने यहाँ पहले बैठकें कर कुलपति–बैठक में मुख्य प्रतियोगिताओं के लिए सम्यक विचारार्थ आयोजन की तिथियाँ प्रस्तावित करें।

बिहार के राज्यपाल

(स्वतंत्रता के बाद)

श्री देव कांत बरूआ

(01 फरवरी 1971 – 4 फरवरी, 1973)

देश के असम राज्य से आनेवाले राजनीतिज्ञ श्री बरूआ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष सन् 1975 से 1977 तक रहे। वे असमी भाषा के लब्धप्रतिष्ठ कवि भी थे।

***

श्री राम चन्द्र धोंडिबा भंडारे

(04 फरवरी, 1973 – 15 जून, 1976)

श्री भंडारे कानून के विद्वान प्राध्यापक और अधिवक्ता थे। साथ ही वे चौथी और पाँचवीं लोकसभा के सदस्य भी थे। 1960–62 की अवधि में वे बम्बई विधान सभा के सदस्य तथा प्रतिपक्ष के नेता भी रहे।

***

राजभवन के बगीचे में आम एवं लिच्ची के फल

मुद्रक : लेजर प्रिंटर्स, पटना 4, फोन : 9334116085
laserpatna@gmail.com